आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 8 अंक : 04 दिसम्बर, 2020 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

शीतलहर में पशुओं का उचित प्रबंधन है जरूरी

प्रिय किसान–पशुपालक भाइयो–बहनो !

राम–राम सा।

पशुपालन की दृष्टि से शीतकाल का समय अत्यंत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इस समय पशुओं की दूध देने की क्षमता शिखर पर होती है और दूध की मांग भी बढ़ जाती है। दूधारू पशुओं में प्रजनन काल और घास–चारा इत्यादि की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता भी इस मौसम में अत्यधिक बनी रहती है, अतः ऐसे समय में पशुओं को ठंड से बचाव और उनके रहन–सहन और आहार का उचित प्रबंधन करना आवश्यक है। यदि पशु को ठंडी हवा व धुंध/कोहरे से बचाव के समुचित उपाय नहीं किए गए तो उनके बीमार हो जाने से उत्पादन में गिरावट आती है साथ ही पशु न्यूमोनिया जैसे रोगों के कारण मृत्यु का भी कारण बन सकते हैं जिसका खामियाजा पशुपालकों को आर्थिक बोझ के रूप में हो सकता है। ठंड से बचाने के लिए पशु को हमेशा पशु आवास में ही बांधकर खिलाना एवं उसका दूध निकालना चाहिए। पशुशाला के दरवाजे–खिड़कियां व अन्य खुले स्थान पर रात के समय बोरी, त्रिपाल व टाट को टांगना चाहिए जिससे पशुओं को सीधी ठंडी हवा से बचाया जा सके। यदि शीत लहर का प्रकोप हो तो पशुओं को अलाव जलाकर भी सर्दी के प्रकोप से बचाया जा सकता है। रात के समय में पशुशाला के फर्श पर पराली या भूसे की बिछावन करें जिससे फर्श की सीधी ठंड से बचाव हो सके। पशुशाला का फर्श ढलान युक्त होना चाहिए जिससे पशुओं का मूत्र बहकर निकल जाए और बिछावन सूखा बना रहे। ऐसे समय में पशुओं को धूप में छोड़ें तथा ताजा व स्वच्छ पानी पिलाएं जो अधिक ठंडा ना हो। पशुओं को हरे चारे विशेषकर बरसीम या रिजका के साथ तूड़ी अथवा भूसा मिलाकर खिलाएं जिससे पशु स्वस्थ एवं निरोग बना रहेगा और दूध का उत्पादन भी कम नहीं होगा, क्योंकि केवल हरा चारा खिलाने से आफरा तथा अपच होने का खतरा बना रहता है। रात के समय सूखा चारा आहार के रूप में उपलब्ध करवाएं। इस मौसम में दुधारू पशुओं को बिनौला अधिक मात्रा में खिलाना चाहिए जिससे दूध में वसा की मात्रा बढ़ सके। पशुओं के रहने के स्थान पर सैंधा नमक का ढ़ेला रखना चाहिए, ताकि पशु आवश्यकता के अनुसार उसे चाटते रहें। इस मौसम में पशुओं को संतुलित आहार दें जिसमें ऊर्जा, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा एवं खनिज तत्व व विटामिन आदि तत्व समुचित मात्रा में हो। गर्म तासीर के खाद्य पदार्थ जैसे गुड़, तेल, अजवायन एवं सौंठ भी पशु आहार में शामिल होना लाभदायक होता है। सर्दी के मौसम में सामान्य दुग्ध ज्वर, गलघोंटू, खुरपका–मुंहपका, पीपीआर जैसी बीमारियों से बचाने के लिए पशुपालन विभाग द्वारा चलाए जा रहे विशेष टीकाकरण अभियानों के अंतर्गत समय–समय पर रोग निरोधक टीके लगवाएं। शीत ऋतु पशुओं की समुचित देखभाल और चारे के संरक्षण उपायों को अपना कर भविष्य की जरूरतों को भी पूरा करने का अवसर है।

जयहिन्द।

(प्रो. {डॉ.} विष्णु शर्मा)

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

राज्य स्तरीय ई-पशुपालक चौपाल

पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान पर विशेषज्ञ वार्ता

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 11 नवम्बर को पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान : क्यों, कब और कैसे विषय पर राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि पशुपालन के क्षेत्र में कृत्रिम गर्भाधान सबसे उपयोगी तकनीकों में से एक है जो कि पशु उत्पादन बढ़ाने हेतु बहुत उपयोगी साबित हुई है। इस तकनीक को प्रयोग में लाने की प्रक्रिया एवं इसकी बारीकियों को प्रशिक्षणकर्ता एवं प्रशिक्षणदाता दोनों को जानना बहुत जरूरी है तभी इसके सार्थक परिणाम मिल सकते हैं। पशुपालक भाईयों के लिए यह तकनीक किसी वरदान से कम नहीं है। ई–पशुपालक चौपाल में विशेषज्ञ पशुपालन विभाग के वरिष्ठ पशुचिकित्सा अधिकारी डॉ. गोविन्द राम चौधरी ने परिचर्चा के दौरान कृत्रिम गर्भाधान के सभी पहलूओं को पशुपालकों को सरल भाषा में बताकर लाभान्वित किया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने चौपाल का संचालन किया।

मुर्गीपालन एक लाभकारी व्यवसाय पर विशेषज्ञ वार्ता

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 25 नवम्बर को "मुर्गी पालन एक लाभकारी व्यवसाय" विषय पर राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल का आयोजन किया गया। पशुपालक चौपाल को सम्बोधित करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि राजस्थान में मुर्गियों की संख्या में पिछली पशु गणना की तुलना में 80 प्रतिशत वृद्धि हुई है। यह ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में मुर्गीपालन के प्रति सकारात्मक रूझान एवं मुर्गी एवं इसके उत्पादों की बाजार में अच्छी मांग को दर्शाता है। देशी मुर्गियों के अण्डे एवं मास की मांग बहुत बढ़ी है जबकि इसकी आपूर्ति कम है। आज कोविड–19 के समय में पशुपालक एवं ग्रामीण युवा इस व्यवसाय को रोजगार हेतु शुरू कर सकते हैं। मुर्गीपालन व्यवसाय के दृष्टिकोण से बहुत अच्छा व्यवसाय है। ई–पशुपालक चौपाल में विशेषज्ञ रूप में आंमत्रित वेटरनरी कॉलेज, मथुरा के अधिष्ठाता प्रो. पी.के. शुक्ला ने बताया कि देश में कुपोषण की समस्या के निवारण हेतु मुर्गी पालन एक मुख्य एवं लाभकारी व्यवसाय है। राजस्थान की ऊसर भूमि मुर्गीपालन के लिए उपयोगी है। अच्छी नस्ल चुनाव, उचित टीकाकरण, संतुलित भोजन, उपयुक्त बिछावन व्यवस्था का ध्यान रखकर पशुपालक इस व्यवसाय से अधिक मुनाफा कमा सकते है। डॉ. शुक्ला ने चर्चा के दौरान पशुपालको के सवालो का जवाब देते हुए उनकी शकांओं का समाधान भी किया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने चौपाल का संचालन किया।

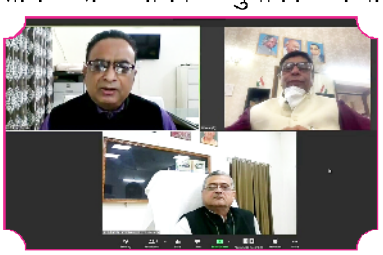

देशी गौवंश में भ्रूण प्रत्यारोपण से पैदा होंगे बछड़े-बछड़िया राजुवास और एन.डी.डी.बी. के मध्य हुआ करार

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु अनुसंधान केन्द्रों पर देशी गायों में भ्रूण प्रत्योपण तकनीक से बछड़े–बछड़ियां पैदा करने का रोड मैप तैयार कर लिया गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के साथ एम.ओ.यू. किया है। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के सहयोग से विश्वविद्यालय के अनुसंधान केन्द्रों पर प्रदेश की प्रमुख चार देशी गौवंश गिर, साहीवाल, थारपारकर एवं राठी नस्ल की देशी गायों में उन्नत जर्म प्लाज्म संवर्धन की दिशा में भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक एक महत्वपूर्ण कदम है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों एवं छात्रों को इस तकनीक की जानकारी उपलब्ध हो पाएगी एवं पशुपालकों को आने वाले समय में उन्नत पशु उत्पादन का लाभ मिल सकेगा। कुलपति प्रो. शर्मा ने बताया कि जहाँ एक गाय से एक साल में एक बछड़ा–बछड़ी पैदा होती है वहाँ इस आधुनिक तकनीक से 8–10 बछड़ा–बछड़ी पैदा हो सकेंगे तथा राज्य के देशी गौवंश का विकास होगा। इस तकनीक से कम उत्पादकता वाले पशु में भ्रूण प्रत्यारोपण करके उच्च उत्पादकता वाली संतति प्राप्त कर प्रदेश को दुग्ध उत्पादन में अग्रणी बनाया जा सकता है। साथ ही पशु नस्ल सुधार की दिशा में भी यह एक क्रांतिकारी कदम साबित होगा। गौरतलब है कि विश्वविद्यालय ने पायलट प्रोजेक्ट के तहत विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीछवाल में थारपारकर नस्ल में भ्रूण प्रत्यारोपण करके सफलता का परचम लहराया था। इस सफलता के बाद बीकानेर के साथ–साथ जयपुर स्थित स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान संस्थान में भी इस प्रोजेक्ट की शुरूआत की जा चुकी है। इसके तहत भ्रूण–प्रत्यारोपण के लिए उच्च आनुवांशिक गुणवत्ता वाली गिर नस्ल की चार गायों को उच्च गुणवत्ता के वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान कर 21 भ्रूण प्राप्त किए गए, जिनमें से 06 भ्रूण प्रत्यारोपित किए गए तथा शेष 15 भ्रूणों को भविष्य में उपयोग करने के लिए तरल नत्रजन में संरक्षित किया गया। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के डॉ. एस.पी. सिंह, प्रभारी, भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक ने इस प्रोजेक्ट के सुचारू रूप से क्रियान्वन करने की जानकारी दी।

क्या है भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक

इस तकनीक में उच्च गुणवत्ता वाली गाय (डोनर गाय) में सुपर ओव्यूलेशन यानी बहुअंडोत्सर्ग करवाकर, उच्च गुणवत्ता वाले सांड के वीर्य से निषेचित किया जाता है। निषेचन के सातवें दिन बाद गाय के गर्भ से भ्रूण को उचित माध्यम से फ्लश कर लिया जाता है तथा भ्रूण को निम्न गुणवत्ता वाली साधारण गाय (ग्राही गाय) के गर्भाशय में प्रत्यारोपित कर दिया जाता है। भ्रूण प्रत्यारोपण के लिए ऐसी गायों का चयन किया जाता है, जिनकी प्रति ब्यांत दुग्ध उत्पादकता कम होती है। ऐसी गायों को सेरोगेट मदर

भी कहा जा सकता है। इन साधारण नस्ल की गाय का केवल गर्भाशय उपयोग में आता है। जबकि उनसे होने वाली संतति अधिक दूध देनी वाली पैदा होती है।

देशी गौवंश के दूध की बढ़ रही है मांग

मानव में स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूकता के कारण देशी गौवंश के दूध की मांग दिन प्रति दिन बढ़ रही है। गाय का दूध वैसे ही अधिक लोकप्रिय है। यही कारण है कि अधिक दूध देने वाली देशी गायों की मांग आज बढ़ रही है। पशुपालकों को ऐसी नस्ल चाहिए जिन्हें पालने में लागत कम से कम और मुनाफा अधिक हो। देशी गौवंश में गिर, राठी, साहीवाल व थारपारकर एक ऐसी ही गाय है। जिनका दूध उत्तम दुधारू पशुओं में शामिल है। राजस्थान में पाई जाने वाली ये देशी नस्ल की गाय भारत की सर्वश्रेष्ठ दुधारू गायों में गिनी जाती है।

पशुधन उत्पादन के क्षेत्र में उद्यमिता एवं बाजार उन्मुख प्रसार विषय पर राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन

वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के पशुधन नवाचार, ज्ञान एवं उद्यमिता केंद्र द्वारा "पशुधन उत्पादन के क्षेत्र में उद्यमिता एवं बाजार उन्मुख प्रसार" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय वेबीनार में कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि पशुचिकित्सा विद्यार्थियों को पशुचिकित्सा व्यवसाय के अतिरिक्त भी अन्य संबंधित विषयों में उद्यमिता की पहचान कर आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि जैविक पशुपालन पशुधन उत्पादन के क्षेत्र में उद्यमिता के नवीन आयाम स्थापित कर सकता है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि इस तरह के वेबिनार का अधिकतम लाभ उठाकर पशुचिकित्सा के क्षेत्र में नवीनतम जानकारी प्राप्त करें। वेबीनार के मुख्य वक्ता भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली के संयुक्त निदेशक (प्रसार शिक्षा) डॉ. महेश चंदर ने उद्यमिता के विभिन्न आयामों पर विस्तृत जानकारी दी तथा विभिन्न विद्यार्थियों की सफलता की स्टोरीज का वर्णन किया। उन्होंने विशेष रूप से छात्रों को सम्बोधित करते हुए विभिन्न स्टार्टअप योजनाओं में भाग लेने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन केंद्र के प्रभारी डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने किया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वी.यू.टी.आर.सी., रतनगढ़ (चूरू)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत उन्नत पशुपालन : जैविक पशुपालन विषय पर पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा2–3, 6–7, 18–19, 20–21 एवं 27–28 नवम्बर को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत वैज्ञानिक पशुपालन एवं प्रबंधन विषय पर पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर) द्वारा 2–3 एवं 6–7 नवम्बर और आत्मा परियोजना के अन्तर्गत 20–21 एवं 27–28 नवम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 188 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., बाकलिया (नागौर)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत उन्नत पशुपालन : जैविक पशुपालन विषय पर पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 5–6, 18–19, 20–21, 23–24, 25–26 एवं 27–28 नवम्बर और आत्मा परियोजना के अन्तर्गत 2–3 नवम्बर को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 210 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., सिरोही

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा वैज्ञानिक पशुपालन एवं प्रबंधन विषय पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत 3–4, 6–7, 19–20 एवं 27–28 नवम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 121 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., कुम्हेर (भरतपुर)

वी.यू.टी.आर.सी., कुम्हेर द्वारा वैज्ञानिक पशुपालन एवं प्रबंधन विषय पर 3–4, 6–7, 18–19, 23–24 एवं 26–27 नवम्बर को केन्द्र परिसर में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 151 पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., टोक

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत वैज्ञानिक पशुपालन एवं प्रबंधन विषय पर वी.यू.टी. आर.सी., टोंक द्वारा 2–3, 5–6, 19–20, 21–22 एवं 23–24 नवम्बर को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 150 पशुपालकों व कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., धौलपुर

वी.यू.टी.आर.सी., धौलपुर द्वारा वैज्ञानिक पशुपालन एवं प्रबंधन विषय पर 6–7, 19–20, 23–24, 25–26 एवं 27–28 नवम्बर को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई द्वारा दिल्ली अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., लूनकरणसर (बीकानेर)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत उन्नत पशुपालन : जैविक पशुपालन विषय पर वी.यू.टी.आर.सी., लूनकरणसर द्वारा 3–4, 6–7, 18–19, 20–21, 24–25 एवं 26–27 नवम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 180 पशुपालकों व कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

वी.यू.टी.आर.सी., बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा वैज्ञानिक पशुपालन एवं प्रबंधन विषय पर 5–6 नवम्बर को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 30 पशुपालकों व कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., अजमेर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 2, 5, 18, 23, 25 एवं 28 नवम्बर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 124 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., कोटा

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 3, 6, 19, 21 एवं 24 नवम्बर को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 114 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा वैज्ञानिक पशुपालन एवं प्रबंधन विषय पर 19–20, 21–22, 23–24, 25–26 एवं 27–28 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत केन्द्र परिसर में दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., झुंझुनूं

वी.यू.टी.आर.सी., झुंझुनू द्वारा वैज्ञानिक पशुपालन एवं प्रबंधन विषय पर 4–5, 7–8, 22–23, 26–27 एवं 29–30 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 154 पशुपालकों व कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., जोधपुर

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत वैज्ञानिक पशुपालन एवं प्रबंधन विषय पर पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 3–4, 5–6, 7–8 एवं 20–21 नवम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 136 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत उन्नत पशुपालन : जैविक पशुपालन विषय पर कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 6–7, 18–19, 20–21, 24–25 एवं 27–28 नवम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 150 किसानों ने भाग लिया।

बकरियों में पी. पी. आर. अथवा प्लेग एक घातक महामारी

पेस्ट डेस पेटिट्स रूमिनेन्टस (पीपीआर) रोग को बकरी प्लेग के नाम से पशुपालक भाई जानते है, जो कि ज्यादातर बकरियों में परन्तु कुछ भेड़ों में भी यह रोग पाया जाता है। यह घातक इसलिए है कि इसमें मृत्युदर काफी ज्यादा, यहां तक कि 50–80 प्रतिशत तक होती है तथा अत्यंत गंभीर रूप लेने पर पशुपालक का पूरा रेवड़ ही बीमारीग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो सकता है। यह रोग भेड़–बकरी के छोटे बच्चों (मेमनों) में भी होता है।

कारण :– पीपीआर बीमारी एक वायरस जनित बीमारी है जो कि मोरबिली वायरस के कारण होता है यह वायरस युवा व छोटे भेड़–बकरियों को अपनी चपेट में ले लेता है। यह स्पर्श तथा संपर्क से फैलने वाली बीमारी है। बीमार पशु के खांसने से, लार के स्वाद से विषाणु दूसरे पशुओं को रोगग्रस्त करते हैं। इसके अलावा, पशु के कमजोर होने पर उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने पर तथा भेड़ बकरियों के गर्भावस्था में होने पर यह रोग जल्दी फैलता है।

लक्षण–

- पीपीआर रोग के लक्षण अचानक ही फैलते हैं।
- पशु को भूख नहीं लगती।
- जुकाम, खांसी तथा छींके आने लगती हैं।
- पशु को एकदम से तेज बुखार हो जाता है।
- आंख व नाक से पानी आने लगता है। शुरूआती लक्षण न्यूमोनिया वाले या ठंड लगने वाले होते हैं परन्तु तीन–चार दिन उपरांत मुंह में छाले होने लगते हैं।
- छाले धीरे–धीरे अल्सर का रूप लेने लगते हैं।
- भेड़–बकरियों को खाने–पीने में दिक्कत होने लगती है।
- मुंह व होंठ पर सूजन आ जाती है।
- मुंह, आंख, नाक के चारों तरफ चिपचिपा स्त्राव हर वक्त रहता है।
- न्यूमोनिया तथा उपरोक्त लक्षणों के अलावा अगर भेड़–बकरी गर्भावस्था में है तो गर्भपात भी हो सकता है।
- कुछ भी न खाने के कारण या फेफड़े संक्रमित होने के कारण पशुओं को सांस लेने में कठिनाई होती है तथा पशु की मृत्यु भी हो जाती है।

उपचार :– चूंकि यह रोग विषाणु जनित है अतः इसका कोई पुख्ता ईलाज नहीं है। हालांकि लक्षणों के आधार पर व जांच के आधार पर पशु का ईलाज करने पर मृत्युदर को कम किया जा सकता है। न्यूमोनिया का ईलाज उचित एंटीबायोटिक से किया जाना चाहिए। छालों तथा घावों की नियमित सफाई करके बोरोग्लिसरिन लगाना चाहिए।

रोकथाम :– जैसे ही न्यूमोनिया के लक्षण दिखें तो तुरन्त उस भेड़ अथवा बकरी को रेवड़ से अलग कर देना चाहिए और पशुचिकित्सक से संपर्क कर ईलाज शुरू करवाना चाहिए तथा अन्य पशुओं को अलग बाड़े में रख देना चाहिए।

टीकाकरण :– भेड़–बकरियों में टीकाकरण ही पीपीआर रोग से बचने का एकमात्र उपाय है अतः पीपीआर टीकाकरण (रक्षा–पी.पी.आर.) 1 मिली दवा चमड़ी के नीचे दिया जाना चाहिए। इसे चार माह की आयु पर दिया जा सकता है। यह टीका भेड़–बकरियों में सुरक्षा प्रदान कर सकता है। टीकाकरण से पूर्व बकरियों को कृमिनाशक भी देवें।

डॉ. दीपिका धूड़िया सहायक प्राध्यापक
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

हरे चारे से बनाएं पौष्टिक साइलेज

पशुपालक अपने दुधारू पशुओं को पूरे साल हरा चारा उपलब्ध करवाना मुश्किल होता है, ऐसे में पशुपालक घर पर ही साइलेज बनाकर अपने पशुओं को पूरे साल हरा चारा उपलब्ध करा सकते हैं। साइलेज खिलाने से पशुओं में दुग्ध उत्पादन अच्छा तथा कई पोषक तत्वों की पूर्ति भी हो जाती है।

साईलेज के लिए उत्तम फसलें

साइलेज बनाने के लिए सभी घासों से या उस फसलों से जिसमें घुलनशील कार्बोहाईड्रेटस् अधिक मात्राओं में होती जैसे मक्का, ज्वार, जई, नेपियर घास, गिन्नी, बरसीम और रिजका। अनाज की फसलों को दूधिया होने की अवस्था में काट लेना चाहिए तथा दलहनी चारे को फूल आने पर काटना चाहिए।

साईलो पिट/गड्ढ़ा

साईलेज जिन गड्ढों में भरा जाता है उन गड्ढ़ों को साईलोपीटस कहते है। गड्ढे का आकार पशुओं की संख्या, किस्म तथा कितने दिनों तक खिलाना, इन सभी पर निर्भर करता है। गड्ढ़े के लिए स्थान ऊँचा होना चाहिए जिसमें वर्षा का पानी प्रवेश नहीं कर सके।

साइलेज बनाने की पद्धति

जब चारे में शुष्क पदार्थ की मात्रा 30 प्रतिशत हो तब साइलेज बनाना चाहिए, अच्छा साइलेज बनाने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। चारे में यदि आर्द्रता की मात्रा अधिक है तो आवश्यक स्तर पर सूखने देना चाहिए। इससे अत्यधिक रिसने और गीलेपन की दुर्गन्ध से बचाव हो जायेगा। साइलेज बनाने के लिए जिस भी हरे चारे का इस्तेमाल आप कर रहे हो उसकी 2 से 5 सेन्टीमीटर के टुकडों में काटकर कुट्टी बना लेना चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा चारा साइलो पिट में दबाकर भरा जा सके जिससे हवा बाहर निकल जाए और किण्वन प्रारम्भ हो जायेगा। चारे को 2–3 फुट साइलो की दीवार से ऊँचे तक या मिट्टी की सतह से ऊपर तक भरें जिससे साइलेज बैठने पर साइलेज गड्ढ़े की ऊपरी भाग के स्तर के ऊपर रहे। दलहनी चारे में 40 किलोग्राम शीरा मिलाना चाहिए। आर्द्रता की मात्रा को कम करने के लिए कुट्टी किए हुए भूसे को नमीदार चारे के साथ मिलाया जा सकता है। भूसा दलहनी चारे की पाचकता बढ़ाता है। गड्ढ़े को भरने के पश्चात् उनको पोलिथीन की चादर से ढ़ककर हवा रहित करना चाहिए। उसको दबाकर रखने के लिए 18 से 20 सेन्टीमीटर मोटी मिट्टी की परत फैला देनी चाहिए। इस परत पर गोबर व चिकनी मिट्टी से लेपन किया जाता है। दरारें पड़ जाने पर उन्हें मिट्टी से बन्द करते रहना चाहिए ताकि गड्ढे में हवा व पानी प्रवेश नहीं कर सके। लगभग 45 से 60 दिनों में साइलेज बनकर तैयार हो जाता है जिससे गड्ढे को एक तरफ से खोलकर मिट्टी व पोलिथीन शीट को हटाकर आवश्यकतानुसार पशुओं को खिलाया जा सकता है। अच्छी गुणवत्ता के साइलेज में 85 से 90 प्रतिशत हरे चारे के बराबर पोषक तत्व होते हैं, इसलिए हरे चारे की कमी के समय साइलेज खिलाकर दुध उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

डॉ. वीरेन्द्र सिंह, डॉ राजेश सिंगाठिया एवं डॉ. सुनील राजोरिया
वी.यू.टी.आर.सी., डूँगरपुर

जैविक खेती और जैविक पशुपालन एक दूसरे के पूरक

जैविक पशुपालन, पशु उत्पादन का वह तरीका है, जिसमें पशु पोषण, पशु स्वास्थ्य, पशु आवास और पशु प्रबंधन में पारिस्थितिक तंत्र के जैविक घटकों के उपयोग पर बल दिया जाता है तथा दवाइयों, भोजन संपूरकों, हार्मोनों और आनुवांशिक रूप से परिवर्तित घटकों का प्रयोग नहीं किया जाता है। जैविक पशुपालन पशु पोषण, पशु आवास, पशु स्वास्थ्य, चारागाह प्रबंधन, पशु प्रजनन, रोग उपचार जैसे कई पहलुओं में आधुनिक पशुपालन से भिन्न हैं। संतुलित और टिकाऊ जैविक पशुपालन हेतु एक से अधिक पशु प्रजातियों का फसलों के साथ एकीकरण किया जाना चाहिए। जैविक खाद्य पदार्थों की वर्तमान में देश–विदेश में ऊंची कीमतों पर मांग लगातार बढ़ रही है, जिसके पीछे मुख्य कारण लोगों में अजैविक खाद्य पदार्थों के नुकसान के प्रति बढ़ती जागरूकता है। पशु उत्पादन को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार की अजैविक कृत्रिम घटकों जैसे एंटीबायोटिक दवाओं, हार्मोनों, भोजन संपूरकों के उपयोग के कारण मानव स्वास्थ्य व पारिस्थितिक तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। मनुष्यों में होने वाली कई घातक बीमारियों जैव कैंसर, एलर्जी, चर्म रोग और पाचन संबंधी विकारों के पीछे इन अजैविक घटकों का उपयोग एक प्रमुख कारण है। जैविक खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग को देखते हुए प्रदेश के बहुत सारे पशुपालक जैविक पशुपालन से जुड़ रहे हैं व आर्थिक लाभ के साक्षी बन रहे हैं। कोई भी पशुपालक अपने सामान्य पशुपालन को जैविक पशुपालन में परिवर्तित कर सकता है जिसके लिए उसे निम्नानुसार निर्धारित मानकों का पालन करना पड़ता है। पशुपालन फार्म का जैविक प्रबंधन व सर्टिफिकेशन आवश्यक है।

- पशुओं को वृद्धि हार्मोन एंटीबायोटिक व अन्य कृत्रिम भोजन संपूरकों के खिलाने की अनुमति नहीं है।
- जैविक पशुपालन हेतु पशुओं का चारा जैविक खेती के माध्यम से उत्पादित होना चाहिए। पशु चारे का कम से कम 80 प्रतिशत भाग जैविक खेती से उत्पादित होना चाहिए। नौ महीने से कम आयु के गौवंश के चारे का 20 प्रतिशत भाग गैर जैविक स्रोत से लिया जा सकता है।
- पशुपालक को पशु के स्वास्थ्य व प्राकृतिक व्यवहार को बढ़ावा देने वाली परिस्थितियों की अनुपालना करनी चाहिए। इन परिस्थितियों में खुला आवास, खुले आवास में प्राकृतिक छाया, ताजी हवा और चराई शामिल हैं। जैसे–मुर्गियों में पर्चिंग हेतु जगह प्रदान करना, भूसे पर पालना, धूल स्नान, कीड़ों की खोज करके खाना आदि जिससे उनके प्राकृतिक व्यवहार को बढ़ावा मिल सके।
- पशु अपशिष्ट से फसल, मिट्टी और पानी को दूषित होने से बचाना चाहिए व अपशिष्ट से कम्पोस्ट खाद बनाकर खेत में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
- जैविक पशुधन उत्पादन में ऐसे पशुओं का चयन करना चाहिए, जो उस स्थान की स्थानीय जलवायु के प्रति अनुकूलित हों तथा

उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक हो। पशुओं के बीमार होने पर हर्बल व प्राकृतिक उपचार दें।

कृषि योग्य प्रणाली में जुगाली करने वाले पशुओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि वे जैविक खाद का स्रोत हैं जो भूमि की उर्वरता को बढ़ाती हैं। जैविक खेती में पशुधन की भूमिका को निम्न बिंदुओं से समझा जा सकता है।

पशुओं द्वारा कृषि भूमि में पोषक तत्त्वों का चक्रण : पशुओं के गोबर में लाखों की संख्या में जीवाणु पाए जाते हैं, जो भूमि में मिलने पर उसमें उपस्थित जटिल पोषक तत्त्वों को सरल पोषक तत्त्वों में तोड़ देते हैं, जिससे ये सरल पोषक तत्त्व उस भूमि में उगाए जाने वाले जैविक पौधों के लिए आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। जैसे–गोबर खाद, पोल्ट्री की बींट आदि। इन खाद का उपयोग करने से मिट्टी में उपस्थित लाभकारी जीवाणुओं, एंजाइम गतिविधि व उर्वरता पर अनुकूल प्रभाव व मिट्टी की उर्वरता पर दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं।

पशुओं द्वारा खरपतवार का नियंत्रण:– पशुओं द्वारा खरपतवार का नियंत्रण भी करवाया जाता है, जिससे जैविक खेती में बाह्य स्रोतों के उपयोग की निर्भरता में कमी आती है और संश्लेषित खरपतवार नाशी के उपयोग पर रोकथाम लगाई जा सकती है, जो जैविक खेती हेतु अति आवश्यक है। बकरी व भेड़ों को फसल कटाई के पश्चात् कृषि अवशेषों व खरपतवार को नियंत्रित करने हेतु खेत में छोड़ा जाता है। कुछ पशुओं की मिट्टी खोदने की प्राकृतिक प्रवृत्ति होती है, जिससे मिट्टी में वायु की उपस्थिति बढ़ती है और वायु द्वारा ऑक्सीकरण अपघटन के कारण मिट्टी में कार्बनिक व नाइट्रोजनी पदार्थों की मात्रा बढ़ जाती है।

अतः संतुलित और टिकाऊ जैविक खेती हेतु, ऐसी भूमि उपयुक्त है, जहां जैविक चारागाह के साथ–साथ जैविक पशुपालन भी किया जाता हो, जिससे पारिस्थितिक तंत्र में पोषक तत्त्वों का पुर्नभरण व संसाधनों का समुचित उपयोग हो सके।

डॉ. मंगेश कुमार एवं डॉ. लूणा राम
राजुवास, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–दिसम्बर, 2020

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	पाली, सिरोही, कोटा, सीकर, टोंक, बारां, चूरू, बीकानेर, हनुमानगढ़
मुंहपका–खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	धौलपुर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, अलवर, बारां, बूंदी, हनुमानगढ़, जालोर, नागौर, राजसमन्द, सीकर, टोंक, कोटा, चित्तौड़गढ़, बारां, चूरू, बीकानेर
गलघोंटू	भैंस, गाय	जयपुर, भीलवाड़ा, अलवर, दौसा, धौलपुर, सीकर, चित्तौड़गढ़, टोंक, भरतपुर
चेचक/छोटी माता	ऊँट, भेड़, बकरी	बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, पाली, सीकर
लंगड़ा रोग	गाय, भैंस	चित्तौड़गढ़, हनुमानगढ़, गंगानगर, बीकानेर
फेसियोलोसिस	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूंगरपुर, सीकर, बून्दी, अलवर
न्यूमोनिक पाश्चुरेल्लोसिस संक्रमण	गाय, बकरी, भेड़	अजमेर, चित्तौडगढ़, उदयपुर, बीकानेर, जयपुर, झुंझुनू, अलवर
अश्वों में इन्फ्लुएंजा रोग	घोड़ा	अजमेर, भीलवाड़ा, जोधपुर, नागौर, सीकर, झुंझुनू, पाली
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर 1800–180–6224 पर सम्पर्क करें।

सफलता की कहानी

सूअर पालन से कमाई कर सफल पशुपालक बने चंद्रभान सारड़ीवाल

चंद्रभान सारड़ीवाल, श्रीगंगानगर जिले के तहसील घड़साना के एक छोटे से गांव 17 एमडी के रहने वाले हैं इनकी शिक्षा 12वीं तक हुई है। चंद्रभान ने गांव में सूअर पालन करके एक नई मिसाल पेश की है। चंद्रभान का कहना है कि सूअर पालन कोई भी किसान कर सकता है। 14 सूअरी व 2 सूअरों से 25 दिसंबर 2019 को राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशालय के केंद्र पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र, सूरतगढ से प्रशिक्षण प्राप्त करके सूअर पालन का व्यवसाय प्रारंभ किया। सूअर पालन के व्यवसाय की शुरुआत करने से पहले प्रशिक्षण लेना बहुत अहम है क्योंकि हर किसी पशुपालक भाई को इसके दवाई व रखरखाव के बारे में जानकारी नहीं होती है। मैंने भी प्रशिक्षण लेकर सूअर पालन का व्यवसाय प्रारंभ किया। जब मैंने इस व्यवसाय को प्रारंभ किया तो मुझे एक मादा सूअर से 10 से 12 बच्चे प्राप्त हुए और यह साल में तीन बार बच्चे पैदा करती है और एक बच्चा 9 से 10 माह में व्यस्क हो जाता है। मेरा यह मानना है कि इस व्यवसाय में इनके रहने का स्थान व अन्य सामग्री पर निवेश की आवश्यकता कम होती है। मैंने केंद्र से प्रशिक्षण के बाद शैड बनाया व इनका रखरखाव व पालन पोषण प्रारंभ कर दिया। मेरा व्यवसाय 14 पशुओं से प्रारंभ किया हुआ अब 150 पशुओं तक पहुंच गया है। मैंने केंद्र के वैज्ञानिकों की सहायता से समय–समय पर बीमारियों का टीकाकरण व परजीवी नियंत्रण तथा आहार व्यवस्था पर ध्यान दिया, जिससे मुझे अच्छा मुनाफा हुआ। चंद्रभान बताते हैं कि वह अपने इस व्यवसाय से सालाना ₹300000 की आय प्राप्त कर लेते हैं। चंद्रभान इस व्यवसाय के लिए अन्य किसानों को भी प्रेरित करते हैं और आने वाले समय में यह उनके लिए एक बड़ा प्रोजेक्ट तैयार करेंगे ताकि सूअरों के उत्पादों की बढ़ती मांग के कारण सूअर पालन का व्यवसाय तेजी से बढ़ सके। चंद्रभान समय–समय पर पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण अनुसंधान केंद्र सूरतगढ़ आकर वैज्ञानिकों से विचार–विमर्श करते हैं वे अपने इस व्यवसाय से बहुत खुश हैं। चंद्रभान अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार तथा पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण अनुसंधान केंद्र सूरतगढ़ को देते हैं।

सम्पर्क सूत्र : चंद्रभान सारड़ीवाल, गांव 17 एमडी तहसील घड़साना, जिला श्रीगंगानगर मो. 8302895023

निदेशक की कलम से...

नकारा पशुओं का बधियाकरण करें

प्रिय, पशुपालक किसान भाइयो–बहनो !

उन्नत पशु प्रजनन कार्यक्रम की सफलता के लिए अवांछित व नकारा पशुओं का बधियाकरण करना उन्नत पशुपालन के लिए महत्त्वपूर्ण कदम है। जिस तरह से खेती में उन्नत बीज से अच्छी फसल प्राप्त होती है वैसी ही उन्नत सांड से हमें पशुओं की अच्छी संतति प्राप्त होती है। इसके बिना डेयरी पशुओं की नस्ल सुधार करना असंभव है। बधियाकरण द्वारा निम्न स्तर के पशु के वंश को आगे बढ़ने से रोका जा सकता है जिससे की पशु द्वारा असक्षम एवं अवांछित संतान पैदा नहीं की जा सके। एक सफल और लाभकारी पशुपालन के लिए नकारा नर पशुओं का बधियाकरण किया जाना बहुत जरूरी है। बधियाकरण द्वारा नस्ल सुधार के साथ अनेक फायदे भी है। बधिया किए गए पशु को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है और मादा पशुओं के साथ बिना किसी कठिनाई के रखा जा सकता है। क्योंकि वह मद में आई मादा के ऊपर नहीं चढ़ता। बछड़ों में बधियाकरण की उचित आयु 2 से 8 माह के बीच होती है। पालतु पशुओं में बधियाकरण की सबसे पुरानी शल्य क्रिया तकनीक में दोनों अंडकोषों को निकाल दिया जाता है। बधियाकरण की एक अन्य विधि बर्डिजो कास्ट्रेटर है जो कि नर गो पशुओं व भैंसों में बधियाकरण के लिए सर्वाधिक रूप में प्रचलित है। बधियाकरण की एक अन्य विधि में रबड़ के छल्ले का उपयोग किया जाता है। नकारा पशुओं में बधियाकरण पशु चिकित्सक के देखरेख में किया जाना ही उचित है। बधियाकरण करके अवांछित और नकारा पशुओं के प्रजनन को नियंत्रित किया जा सकता है। इससे पशुपालकों को आर्थिक नुकसान भी नहीं होता तथा पशुओं की प्रजनन क्षमता में भी इजाफा होता है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर (मो. 9414283388)

RAJUVAS e-पशुपालक चौपाल

माह के प्रत्येक द्वितीय एवं चतुर्थ बुधवार को
समय : दोपहर 12.00 बजे से 1.00 बजे तक

राजुवास के आधिकारिक फेसबुक पेज से सीधा प्रसारण
LIVE https://www.facebook.com/RAJUVASOfficialWebPage

मुस्कान !

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया